om 1 Delhi Final 1_Page 1 and 2 18/03/2015 10:57 Page 8

मुज़फ्फरनगर-गाँधी नगर। शिव जयन्ती पर जे.वी. पब्लिक स्कूल के प्रधानाचार्य वचन सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. विजय।

कौशाम्बी-उ.प्र.। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के दौरान आयोजित कार्यक्रम में परियोजना निदेशक आर.सी. पाण्डेय को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कमल।

खानपुर-राज.। नवनिर्वाचित सरपंच ललित राठौर व उप सरपंच सुधीर पार्थ को ज्ञानचर्चा के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. तपस्विनी।

चुनार-उ.प्र.। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में सुशील सिंह,पटेल बाबा, डॉ. सुधा गंगवार, ब्र.कु. कुसुम तथा अन्य।

झाँसी-राजगढ़(उ.प्र.)। त्रिमूर्ति शिव जयन्ती के पावन पर्व पर शिव ध्वजारोहण के समय उपस्थित हैं नगरपालिका अध्यक्ष धन्नूलाल गौतम, पार्षद अवधेश यादव, ब्र.कु. प्रतिमा तथा ब्र.कु. रामकुमार।

जहांगीराबाद। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित 'अलविदा तनाव' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलन के पश्चात् मंच पर उपस्थित हैं एस.एच.ओ. राजेन्द्र सिंह, विधायक होशियार सिंह, ब्र.कु. राजेश्री, ब्र.कु. मंजु, ब्र.कु. शिल्पा व अन्य।

जीवन शुद्ध करने वाले आशीर्वाद के पात्र

प्रजापिता ब्रह्मा ने कल्प के आदि में यज्ञ सहित प्रजा को रच करके कहा इस यज्ञ द्वारा वृद्धि को पाओ अर्थात् उन्नति को पाओ। जितना जीवन रूपी यज्ञ को शुद्धिकरण में लगायेंगे उतना आत्मोन्नति को प्राप्त करेंगें। यज्ञ जिसमें तुम लोगों का अनिष्ट नहीं होता है, विनाश रहित, इष्ट सम्बन्धियों की कामनाओं की पूर्ति करेगा। इस यज्ञ द्वारा देवताओं की उन्नति करो अर्थात् दैवी संस्कारों की वृद्धि करो। ये देवता लोग उन्नति करेंगे, ये देवता लोग तुम लोगों की उन्नति करेंगे अर्थात् जितना जीवन में दैवी संस्कारों को धारण करेंगे, अच्छे विचारों को धारण करेंगे उतनी आत्मोन्नति होगी। वहीं दैवी संस्कार, नित्य हमें प्रगति के मार्ग पर ले जायेंगे। आराध्य सम्बन्धी भोगों को भी उपलब्ध करायेंगे। जीवन में जो आवश्यकता है, हर चीज़ उसके लिए हाज़िर कर देंगे। प्रकृति भी ऐसी आत्माओं की सेवा में हाज़िर हो जायेगी। भगवान ने आगे कहा कि इस सृष्टि चक्र के अनुसार जो नहीं चलता है, वह पापायु अर्थात् पापी है। इंद्रियों का सुख चाहने वाला व्यर्थ जीता है। अर्थात् यज्ञ ऐसी विशेष विधि है, जिसमें इंद्रियों का आराम नहीं अपितु अक्षय सुख है। इंद्रियों का संयम के साथ लगने का विधान है। शुद्धिकरण की प्रक्रिया में इंद्रियों के साथ लगने का एक विधान है। इंद्रियों का आराम चाहने वाला पापात्मा है। इसलिए हे अर्जुन! तुम अपनी इंद्रियों को भी यज्ञ के शुद्धिकरण की प्रक्रिया में नित्य लगाते रहो। यहाँ पर एक बहुत सुंदर बात भगवान ने कही है कि अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से होती है। अब मनुष्य हमेशा स्थूल रूप से सोचता है, इसलिए जब भी कभी बरसात नहीं होती है, तो यज्ञ करते हैं कि गीता में ऐसा कहा गया है। लेकिन इसके भावार्थ को उन्होंने समझा नहीं, कि भगवान कभी स्थूल स्तर पर बात नहीं करेगा। भगवान जिसको सुपर कॉन्शियस कहते हैं, उसकी जो समझानी है वो भी उस स्तर की होती है। उसके गुह्य रहस्य को समझने की आवश्यकता है। अन्न की उत्पति वृष्टि से होती है अर्थात् आत्मा को जो भोजन चाहिए उसकी उत्पति वृष्टि से होती है। वृष्टि अर्थात् आशीर्वाद। जहाँ आशीर्वाद की वृष्टि होती है, वहाँ आत्मा को नित्य भोजन प्राप्त होता है अर्थात् अच्छे विचारों के भोजन से उसकी आत्मा श्रेष्ठ बनने लगती है, आंतरिक तृप्ति का अनुभव करने लगती है। इसलिए हे अर्जुन! ऐसा कर्म करो, क्योंकि वृष्टि का आधार यज्ञ है अर्थात् अब जीवन को शुद्धिकरण की विधि में लगाओ। और जो व्यक्ति अपने इंद्रियों को भी शुद्ध करता है, जीवन को भी शुद्ध करता है। ऐसी आत्माओं के लिए हर व्यक्ति आशीर्वाद की वृष्टि करता ही है और जब उसकी वृष्टि होती है तब जीवन के अंदर सम्पन्नता आती है। इसलिए कहा कि अन्न की उत्पति वृष्टि से होती है। वृष्टि अर्थात् कृपा यज्ञ से होती है। जितना शुद्धिकरण में अपने आपको लगाओ, यह यज्ञ कर्मों से ही उत्पन्न होने वाला है। अर्थात् अच्छे कर्म करो उसके लिए और उसी से सम्पूर्ण करो उसको वा उसी से पूर्ण करो। कर्म ज्ञान से उत्पन्न होता है, वेदों से वेद माना ही ज्ञान। इसलिए अच्छे कर्म करने की प्रेरणा ज्ञान से मिलती है और ज्ञान कहाँ से मिलता है? अविनाशी परमात्मा जो ज्ञान का सागर है वहाँ से मिलता है। कितनी सुंदर एक विधि बतायी है कि जीवन को शुद्धिकरण करने से क्या प्राप्ति होती है। हर आत्मा के आशीर्वाद नित्य प्राप्त करते रहते हैं और जीवन को इतना सुंदर बना सकते हैं। ज्ञान से पूर्ण हमारा जीवन होने लगता है। इसलिए कहा कि भगवान कभी स्थूल स्तर पर बात नहीं करते हैं। जितना ऊँचा उनका स्तर है, उतने ही ऊँचे भाव से वे अर्जुन को प्रेरणा दे रहे हैं। जैसे दुनिया में भी कहा जाता है कि जिस कलर का चश्मा पहनेंगे, वैसा ही नज़र आने लगता है। पीले रंग का चश्मा पहनो तो उसको सब पीला ही पीला नज़र आने लगता है। लाल रंग का चश्मा पहनो तो सब लाल ही लाल नज़र आने लगता है। ऐसे ही दुनिया के मनुष्यों में जब हिंसात्मक भावनायें आने लगीं तो उनकी दृष्टि भी वैसी बन गई, भगवान ने भी तो गीता में युद्ध की प्रेरणा दी है। भगवान जो सर्वोच्च सत्ता है इस संसार की। स्वयं मात-पिता हैं व पालनहार है, तो क्या अपने बच्चों को आपस में लड़ने की प्रेरणा देंगे, कभी नहीं। यदि लड़ते होंगे तो उसको छुड़ायेंगे कि क्यों लड़ रहे हो। कभी लड़ने की प्रेरणा नहीं देंगे।

मानव जीवन में...

-पेज 2 का शेष

नहीं है। इसलिए मंदिर का नाम 'जलेश्वर महादेव' रखना चाहिए। और तीसरे समूह के लोगों ने कहा कि यह रण सौभाग्यशाली है जहाँ ऐसा चमत्कार हुआ इसलिए यहाँ बनने वाले मंदिर का नाम 'रणेश्वर महादेव' रखना चाहिए। ऐसे अंदर-ही-अंदर लड़कर मरने-मारने पर उतारू हो गये। परंतु मूल बात थी पानी की। पानी ने ही बालक का जीवन बचाया था। इसलिए वाद-विवाद छोड़ो और मानव की तरह बनो, अहंकार के पुतले की तरह न जीओ।

आज के मानव की यही करुणता है। उसे दूसरों को हराना है, उसे दूसरों को हराना है, जीतने के लिए नहीं, लेकिन दूसरे के अहम को संतोष देने के लिए। जो हार को समझता है वही देर-सवेर जीत का अधिकारी बन सकता है। कान निंदा श्रवण के लिए नहीं हैं। आप जीभ का उपयोग निंदा कथन या निंदात्मक बातों के प्रचार-प्रसार के लिए नहीं करो। महात्मा गांधी इसलिए कहते थे कि बुद्धि का शुद्ध विकास अच्छी आत्मा और शरीर के विकास के साथ-साथ और समांतर गति से चलना चाहिए। हृदय, बुद्धि और शरीर के बीच सामंजस्य न होने के कारण ही जो परिणाम आया है वह असहनीय है। हृदय की वृत्ति बिना तैयार ज़मीन में उगती घास है, जो उगता है और अपनी तरह मुरझा जाता है, सूख जाता है। यह स्थिति दयाजनक होने के बावजूद स्तुतियोग्य गिनी जाती है।

विद्या का केवल विवाद के लिए उपयोग हो, धन का केवल अभिमान प्रदर्शन के लिए प्रयोग हो, तो ये 'विकास' कहा जाये या 'विनाश'? मनुष्य संस्कारी और सदाचारी बनना चाहता है तो लाओत्से के प्रसंग को देखो, उसी तरह जितेन्द्रिय बनना चाहिए। आज के मनुष्य इंद्रियों के वश में है, स्वयं के नियंत्रण में नहीं। परिणामस्वरूप मानवता या मानव आपस में प्रेम करने के बजाय खुद की वृत्तियों, तृष्णाओं और आकांक्षाओं से प्रेम करता है। वृत्तियां उसको बहकाती हैं। आज का मानव शांतिप्रिय बनने के बदले कोलाहल प्रिय बन गया है। मानव जीवन में कोलाहल कम हो और शांति प्रस्फुटित हो उसके लिए क्या करना चाहिए?

पाँच बातें:-

1.मनुष्य को व्यर्थ दलीलों, वाद-विवाद से मुक्त तथा वाणी संयम होना चाहिए।

2.विकास के लिए बाह्य की ओर सम्पूर्ण शक्ति केन्द्रित करने के बदले 'अंदर' के विकास को ज़्यादा महत्व देना चाहिए।

3.मनुष्य को आजकल सभी क्षेत्रों में 'जीत' का जुनून चढ़ा हुआ है। परिणाम स्वरूप सत्य और असत्य सिद्ध करने के लिए व्यर्थ विवाद करता है।

4.बाह्य शांति की खोज के बदले मनुष्य को शांति की आंतरिक खोज को महत्व देना होगा। उसके लिए वैचारिक शुद्धि की ओर ध्यान देना होगा।

5.अंदर का कोलाहल थमेगा तो ही बाहर का कोलाहल रुकेगा यह बात याद रखनी पड़ेगी।

स्वास्थ्य की परिभाषा...

- पेज 10 का शेष

तो इसका एक ही कारण है कि उसकी भोगी प्रवृत्ति बहुत अधिक है, जिसके कारण बीच-बीच में इंद्रियां चंचल होकर रसों के रसास्वादन के लिए आतुर रहती हैं। जिससे योग साधना में वो परिपक्वता नहीं आ पाती, जो आनी चाहिए। परमात्मा के कार्य में संलग्न बहुत सारे योगी आत्माएं जिन्हें शारीरिक कष्ट है या फिर छोटी-मोटी बीमारियां हैं, उसके लिए ही शायद परमात्मा कहते हैं कि जितना हम शरीर से अलग अपने आप को करेंगे, उतना ही हम उन रोगों से अपने आप को दूर कर पायेंगे। क्योंकि शरीर से डिटैच होने से इंद्रियां शांत हो जाती हैं और हमको उतना ही भोजन चाहिए जो हमारे शरीर के तत्वों की क्षति-पूर्ति कर सके। ये बहुत आसान है, इसके लिए बस एक अभ्यास की ज़रूरत है, अपने आप को शरीर से बार-बार डिटैच करने की। इससे हम काफी लंबे समय तक अपने शरीर को स्वस्थ रख सकते हैं और साधना भी कर सकते हैं।